

पद २८५

(राग: बागेश्री बहार – ताल: त्रिताल)

निंदिया मा दरस माको दीनुवा । ना जानू मोहे का कीनुवा बालमा
ये आज भईलुवा ॥ध्रु॥ छब देखत ही मै तो सुद हारी । धन तन
मन जीवन सब वारी ॥१॥ टुक देख अपनो करलीना । चित्त उचक
बावर कर दीना ॥२॥ ऐसो मोहन दूजो नहीं माई । अलबेला यहि
मानिक सांई ॥३॥